IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

तिरहुता लिपि आ' ओकर वैशिष्ट्य : एक विश्लेषण

1. डा. विजयेन्द्र झा, 2. डा. सुरेन्द्र भारद्वाज

1. पूर्व प्रधानाचार्य, सम्प्रति -अध्यक्ष मैथिली विभाग, एल. एन. टी. कालेज (अंगीभूत एकाइ, बी. आर. ए. बी. यू.) मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

2. वरीय सहायक प्राचार्य, मैथिली विभाग, सी. एम. कालेज (अंगीभूत एकाइ, एल. एन. एम. यू.) दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश

"मिथिलाक्षर" वा "तिरहुता" बिहारक मिथिला प्रान्तक प्राचीनतम भाषा "मैथिली" क लिपि थिक, जकर अपन स्वतंत्र सत्ता अछि। प्रस्तुत आलेखक विवरणसँ स्पष्ट अछि जे 'मिथिलाक्षर' वा 'तिरहुता' एकटा स्वतंत्र लिपि थिक जे हजारो सालसँ वैज्ञानिक रूपेँ मिथिलाक व्यावहारिक जीवन आ' ग्रन्थ लेखनमे प्रयुक्त होइत आबि रहल अछि। तिरहुता लिपिक उद्‌भव, ओकर श्रोत आ'दृष्टान्त, प्राचीन पोथी, अभिलेख, शिलापट आदि जे तिरहुता लिपिमे लिखल अछि, तकरा सबहिक दृष्टान्त प्रस्तुत क' एकर प्राचीनताकेँ स्थापित करबाक लेल प्रस्तुत आलेखमे प्रयास कएल गेल अछि। तिरहुताक विभिन्न कालखण्डमे नामकरण, जेना- मैथिली लिपि, वैदेही लिपि, मिथिलाक्षर, मैथिलाक्षर तिरहुता वा तिर्हुता इत्यादि मैथिली भाषाक ऐतिहासिता सिद्‌ध करैत अछि। तिरहुता लिपिक वर्तनी सेहो अन्य भारतीय आर्यभाषा वा विश्वभाषासँ तुलनात्मक रूपेँ सहज अछि जे एकर "वर्णमाला" वा "ककहरा"क ध्वनि- उच्चारणसँ स्पष्ट भ' जाइछ। तेँ एकर वर्णमालाकेँ 'हरा' कहल जाइछ तथा ध्वनि विषमताक संकेत एहिमे अक्षरारम्भहिमे दए देल जाइछ आ' वर्णमालाक अन्त उर्ध्वगतिएँ होइछ जे रोमण वा आंग्ल भाषाक लिखाबटि सदृशहिँ बिनु हाथ उठओने लिखल जाइछ, इएह मिथिलाक्षरक मूल वैशिष्ट्य थिक।

बीज-शब्द : अभिलेख, ऐतिहासिकता, ककहरा, तिरहुता, नालन्दा,पासी, मिथिला, मिथिलाक्षर, लिपि, वर्णमाला, विक्रमशिला, वैदेही, वैदिक कर्मकाण्ड, वैशिष्य, शिलापट

प्राक्कथन

आखरकेँ लिखबाक पद्धति, ध्वनिकेँ लिखि अपन विचार व्यक्त करबाक चेन्हकेँ लिपि कहल जाइत अछि। लिपि शब्द 'लिप्यते 'सँ निःसृत अछि। जखन मनुक्ख बजैत अछि तँ ओ अपन बोलीकेँ मुह, नासिका, जीह, ठोर, दाँत आदिक मद्दतिसँ ध्वनिक माध्यमे अभिव्यक्त करैत अछि। 'वर्ण' वा 'अक्षर' एहि ध्वनिक संकेत स्वरूप थिक। मनुक्खक संग लिपिक अविच्छेद सम्बन्ध अछि। प्राचीन कालमे सम्पूर्ण भारतवर्षमे दुइ गोट लिपि छल पठन-पाठनक निमित्त आ' दैनिक व्यवहारक निमित्त। पठन-पाठनक लिपिक प्रयोग ब्राह्मणक द्वारा होइत छल तँ कालान्तरमे ओ 'ब्राह्मी लिपि' कहओलक तथा प्रतिदिनक व्यवहार-लिपि साधारणतः वाणिज्य व्यवसाय एवं दिन प्रतिदिनक कार्यक हेतु होइत छल, जकरा मागध लिपि, नागरी लिपि वा कव्व लिपि कहल जाइत छलैक। यद्यपि 'ललित विस्तर'मे चौंसँठि लिपिक तथा जैनक प्रसिद्ध ग्रन्थ 'पन्नवण सूत्र' आओर 'समवायांग सूत्र 'मे अठारह लिपिक उल्लेख भेटैत अछि।

' मैथिली भाषाक अपन एकटा पृथक् लिपि अछि जे 'तिरहुता' अथवा 'मिथिलाक्षर' कहबैत अछि। ई भारतक 'ब्राह्मी लिपि'सँ किछु मिलैत-जुलैत अछि। एकर सृजन मनुक्खक विभिन्न अंगक आकार आ' वैदिक कर्मकाण्डमे प्रयुक्त याकज्ञि मण्डप, त्रिकोण आ' चतुष्कोणक आधारपर भेल अछि। मिथिलाक चित्रकला, विशेष कए 'अरिपन' (भूमि आलेपन) सँ ई सम्बन्धित अछि। विदेह राज्यक संस्थापक आर्यनृप विदेघ माथव आ' गौतम ऋषिक मार्गदर्शनमे मिथिला क्षेत्र पहुँचयवला आर्यलोकनिक प्रथम समूह अपना संग सिन्धुघाटी (ब्रह्मावर्त) सभ्यता, संस्कृति, भाषा एवं लिपि लऽ कए आयल छलाह। 'वृहदारण्यक उपनिषद् मे वर्णित जनक याज्ञवल्क्य तथा गार्गी-पाज्ञवल्क्य संवादमे जे अंतर्दृष्टिसभ उपलब्ध होइछ, ओहिसँ एहन प्रतीत होइछ जे ओहि युग धरि 'विदेह' (मिथिला) एकटा सर्वरूपेण विकसित राज्यक स्वरूप लऽ चुकल छल; जकर अपन स्वतंत्र वैदिक भाषा आ' लिपि छल। बौद्ध ग्रन्थ 'ललित विस्तर 'मे सेहो एहि तथ्यक संकेत भेटैत अछि। एहि ग्रन्थक चीनी भाषामे अनुवाद 308 ई.मे भेल छल आ' एहिमे भगवान् बुद्धक समयमे भारतमे प्रचलित चौंसठि लिपिसभक सूची प्रस्तुत कएल गेल अछि; जाहिमे 'विदेह लिपि'क सेहो स्थान अछि। एहिसँ सिद्ध होइछ जे ब्राह्मी लिपिए जकाँ विदेह लिपिक सेहो विकास वैदिक युगे मे भेल। अतएव, भारतक ई एकटा प्राचीनतम लिपि अछि।

मिथिलाक्षरक सभसँ प्राचीन साक्ष्य भागलपुर जिलाक मंदार-पर्वतक अभिलेखमे भेटैत अछि; जकरा देवघरमे राखल गेल छल जतऽ एहिपर डॉ. राजेन्द्र लाल मित्रक अन्वेषण-दृष्टि सभसँ पहिने पड़ल छल। ओ एकर प्रकाशन 'जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल 'क 1883 ई.क अंकमे पृष्ठ 190-91 पर करबओलनि। ई अभिलेख अनुमानतः गुप्त वंशक
राजा आदित्य सेनक शासनकाल अर्थात् 7म सदीक अन्तिम चरणमे उत्कीर्ण कएल मानल गेल अछि। डॉ. आर.सी. मजुमदार सेहो एही प्रकारक अभिमत व्यक्त कएलनि अछि। 1

मिथिलाक्षरक अनेको प्राचीन साक्ष्य नेपालक विभिन्न पुस्तकालयसभमे पड़ल अछि। भारतीय शिक्षा केन्द्र आ' धर्म-स्थलसभपर 12 म सँ 14म शताब्दीमे अनेको विध्वंसक मुस्लिम आक्रमण होइत रहल। ओहि क्रममे वख्तियार खिजलीक नेतृत्वमे आक्रान्तासभ नालान्दा आ' विक्रमशिला विश्वविद्यालयक ग्रन्थागारसभकेँ जराए कए खाक कऽ देलक। मिथिला प्रदेशपर सेहो जखन 1324 ई. मे मोहम्मद तुगलक आक्रमण कऽ देलक, ओहि अवधिमे 'मिथिलाक्षर 'क अनेको दुर्लभ पाण्डुलिपिसभकेँ संग लऽ कए किछु सचेष्ट बुद्धिजीवीलोकनि नेपालक भीतरी क्षेत्र दिसि पलायन कऽ गेल छलाह। एहि प्रकारेँ जे पाण्डुलिपि नष्ट होएबासँ बचि गेल, ओएह वर्तमानमे नेपालक विभिन्न पुस्तकालय सबमे देखबामे अबैत अछि। 14म शताब्दीमे विद्यापति द्वारा हस्तलिखित मिथिलाक्षरक सम्पूर्ण 'श्रीमद्भागवत्'क प्रतिलिपि दरभंगाक राज पुस्ताकलयमे राखल अछि। दुर्भाग्यवश, ओहि प्रतिष्ठित पुस्तकालयसँ कतोक अन्य दुर्लभ पाण्डुलिपिसभ कर्मचारीलोकनिक षड्यंत्रसँ चोरि भऽ गेल अछि।

मिथिलाक्षरक दूटा प्राचीन साक्ष्य, जे 13 म सदीक कहल जाइत अछि: ओ पटना स्थित 'उपेन्द्र महारथी शिल्प संस्थान संग्रहालय'मे राखल अछि। एकटा पाण्डुलिपि 'मिथिलाभाषा रामायण' तथा दोसर 'मैथिली महाभारत 'क अछि; जकर रचना 1265 ई. मे जितवारपुर गाम (मधुबनी) क निवासी चन्द्रमणि दत्त कएने छलाह। बारह सएसँ बेसी पृष्ठक एहि दुनू पाण्डुलिपिक अधिकांश भाग मिथिलाक्षर लिपिमे आ' किछु देवनागरीमे हस्तलिखित अछि। दुनू पाण्डुलिपिमे 'रामायण' आ' महाभारतक विभिन्न महत्त्वपूर्ण घटनासभक अनेको चित्रकारी द्वारा सेहो दर्शाओल गेल अछि। मिथिलाक चित्रकलापर गम्भीर अनुसंधान करबाक क्रममे स्वर्गीय उपेन्द्र महारथी एहि पाण्डुलिपिसभक संकलन जितवारपुर गामसँ कएने छलाह। एहि ऐतिहासिक गामक ख्याति मिथिलाक इतिहासमे, विशेषकए चित्रकला लऽ कए रहल अछि। पद्मश्री जगदम्बा देवी आ' चन्द्रकला देवी सन अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महिला चित्रकार एही गामक विभूति छलीह। चन्द्रमणि द्वारा लिखित दुनू पाण्डुलिपि दिसि अद्यावधि कोनो इतिहासकारलोकनिक ध्यान नहि गेलनि अछि। कतोक वर्ष धरि ई दुनू पाण्डुलिपि उपेन्द्र महारथीक मृत्युक पश्चात् उपेक्षित दशामे शिल्प-संथानमे पड़ल रहल। वर्ष 2010 ई.मे आबि संस्थान भवनक सफाइ करबा काल अधिकारीलोकनिक नजरि एहिपर पड़ल। बेसी दिनसँ
पडल आ' समुचित रखरखाब नहि होएबाक कारण ओकर आवरण पृष्ठ नीक जेकाँ क्षतिग्रस्त भऽ गेल तथा भीतरक पृष्ठ सेहो पिअर भ' कए धुँधराए गेल । पत्रकार रीमा सोपमक संग एकटा साक्षात्कारमे शिल्प संस्थान संग्रहालयक प्रभारी श्री अशोक सिंहा नवम्बर, 2010मे दाबा कएलनि जे 'मिथिलाभाषा रामायण 'क पाण्डुलिपि देशमे अद्यावधि लिखित रामकथापर नब प्रकाश देत।ओ पाण्डुलिपिक प्राचीनताक सम्बन्धमे कहलनि जे गोस्वामी तुलसीदास (1532-1623 ई.) रामचरितमानसक रचना 16म शताब्दीमे कएने छलाह जखन कि 'मिथिलाभाषा रामायण'क रचना ओहिसँ बहुत पहिनहि चन्द्रदत द्वारा 13म शताब्दीमे भऽ चुकल छल। एतए धरि जे महाकवि विद्यापति (1350-1450 ई.) क जीवनकालो सँ पहिनहि मैथिली रामायणक रचना भऽ चुकल छल। श्री सिन्हा महोदयक इहो कथन छनि जे शिल्प संस्थानक संग्रहालयक एहि बातपर गर्व अछि जे एहन अनमोल पाण्डुलिपि एहिठाम सुरक्षित अछि।2
एहि मैथिली रामायणमे रामकथाक संग-संग मिथिलाक राजवंशक इतिहाह सेहो वर्णित अछि। कथाक संग चित्रकारी रहलासँ एकर आकर्षण आ'र बढि गेल अछि।शिल्प संस्थानक संग्रहालय रामायण तथा महाभारतक कथित दुनू मैथिली पाण्डुलिपिक महत्त्वक मूल्यांकन आ' विश्लेषणक लेल इतिहासकारलोकनि विशेषज्ञलोकनिसँ सम्पर्क कऽ रहल छथि।3
वर्तमान समयमे मिथिलाक्षर लिखबाक रीतिमे क्षेत्रीय आधारपर किछु अन्तर आएल अछि, मुदा एकर मूल स्वरूपमे कोनो परिवर्तन नहि भेल अछि। पश्चिमक नागरी (हिन्दी) लिपिक प्रभाव एहिपर 19म सदीक पूर्वार्द्ध धरि नहि पड़ल छल। मुगल शासनक स्थापनाक पश्चात् मगही आ' भोजपुरी भाषासभ नागरी लिपिकेँ अपनाए लेलक, जखन कि मैथिली भाषाक अपन मिथिलाक्षर लिपि पूर्ववत् चलिते रहल। मुदा, देश स्वाधीन भेलाक उपरान्त राष्ट्रभाषा हिन्दी आ' ओकर देवनागरी लिपिक प्रभाव मैथिली भाषा आ' मिथिलाक्षर लिपिपर एतेक बेसी पड़ल जे सरकारी काज-राज आ' पढ़ाइ-लिखाइमे मैथिली भाषी क्षेत्रमे सेहो एकरा स्थान नहि देल गेल। एकर दुष्परिणाम ई भेल जे बोलचालक भाषाक रूपमे तँ मैथिली जीवित रहल आ' लिखित रूपमे एकर साहित्यमे अभिवृद्धि होइत रहल, मुदा एकर अपन लिपि 'तिरहुता' लुप्त होइत चलि गेल। वर्तमानमे स्थिति एहन भऽ गेल अछि जे मैथिलीक समस्त पोथी देवनागरी लिपिए मे प्रकाशित भऽ रहल अछि। एतबे नहि, मिथिलाक्षरमे सही (हस्ताक्षर) करयबला लोकक संख्या सेहो गोटपङड़ा रहि गेल अछि। स्वतंत्र भारतमे एकटा सुसमृद्ध तथा संवैधानिक मान्यता प्राप्त मैथिली एहेन क्षेत्रीय भाषाक लिपिक लुप्त हएब भारतीय साहित्यक लेल बहुत पैथ छति थिक।

मिथिलाक्षरक विभिन्न नाम आ' ऐतिहासिकता :

मैथिली भाषाक अपन लिपि अछि, जकरा विभिन्न नामसँ अभिहित कएल जाइत अछि- 'मैथिली लिपि', 'वैदेही लिपि', 'मिथिलाक्षर', 'मैथिलाक्षर' ; मुदा ओकर उचित नाम छैक 'तिहुता' (तिरहुता); यद्यपि किछु अनभिज्ञ लोक एकरा 'बङ्गलाक विकृत रूप' वा बिहारक ओझा (झा) ब्राह्मणलोकनिक द्वारा मुख्यत: प्रयोग कएल जाए बला 'ओझा' लिपि सेहो

कहैत छथि। 'तिरहुता' नामसँ ज्ञात होइत अछि जे ई तिरहुत देशक थिक तथा एकर विकास 'तीरभुक्त' वा 'तिर्हुत' नामक व्यवहार आरम्भ भेलाक पश्चात् पूर्णता प्राप्त कऽ कए भेल होयत। एहिसँ पूर्व एकरा मागधी लिपि पदहिसँ वा जेना बौद्ध ग्रन्थ 'ललित विस्तर 'मे देल अछि 'वैदेही लिपिए'क बोध होइत छल होयत, किएक तँ तावत् पूर्णता आ' स्वतंत्रताक अस्तित्व नहि प्राप्त कएने छल होयत।

मैथिली भाषा एवं लिपिक उल्लेख सर्वप्रथम पश्चात्य विद्वान् एच. कोलब्रुक 1801 ई. मे अपन पुस्तक 'एशिआटिक रिसर्चेज 'मे कएलनि। पोथीमे ओ मैथिलीक 'Maithelee' वा 'Mythili' रूपमे लिखैत छथि। एहिसँ पहिने मिथिला-भाषाक लिपिकेँ 'तिर्हुता' (तिरहुता) कहल जाइत छल, अद्यावधि एहि लिपिक निमित्त व्यवहृत संज्ञापद अछि। प्रायः 'वैदेही' लिपि तिरहुता नाम गुप्त साम्राज्य कालहिमे पड़ल। 14म-15म शताब्दीमे गुप्त साम्राज्य कालक 'वैदेही' तीरभुक्तिक नामसँ प्रसिद्ध भेल। आधुनिक 'तिरहुत' तीरभुक्तिक परिवर्तित नाम थिक, जकरा आधारपर ओहि क्षेत्रक लिपि आ' भाषाक नाम तिर्हुता (तिरहुता) पड़ल अछि। 'अबुल फजल' अपन ग्रन्थ 'आइने अकब (1598 ई.) मे एहि क्षेत्रक भाषा एवं लिपिक 'तिरहुतिआना' (तिरहुब तिर्हुता) कहलनि अछि।4

वस्तुतः मिथिलाक्षर अथवा तिरहुताक अपन एकटा विशिष्ट इतिहास अछि। एहि लिपिक रचना मनुक्खक विभिन्न आकार तथा वैदिक कर्मकाण्डमे प्रयुक्त याज्ञिक मण्डप, त्रिकोण ओ चतुष्कोणक आधारपर भेल अछि; जकर चर्च पहिनहिँ कएल गेल अछि। लिपिशास्त्रक विद्वान् 'बार्टन'क अनुसार समस्त प्राचीन लिपिक उद्भूत चित्रकलासँ भेल अछि। मिथिलाक्षरक उत्पत्ति ब्राह्मी लिपिक एकटा उपभेद कुटिल (पूर्वी भारतीय) लिपिसँ भेल अछि। भारतवर्षक प्राचीनतम प्राप्त लिपि 'ब्राह्मी' आ' खरोष्ठीकेँ मानल जाइछ। एकर साक्ष्य प्राचीन शिलालेख आ' ताम्रपत्रसभमे भेटैछ। ब्राह्मी लिपिक उत्पत्तिक सम्बन्धमे विद्वान् लोकनिमे मतभेद अछि। किछु विद्वानक मतानुसार ब्राह्मीलिपिक सम्बन्ध कोनो विदेशी लिपिसँ अछि, तँ किछु विद्वान् लोकनि एकर उद्भव ओ विकास भारतवर्षसँ मानैत छथि। कतोक विद्वान् एकरा ब्राह्मीक पूर्वी भारतक एकटा रूप नागरीसँ मानैत छथि, मुदा हमरा वुझने ई ब्राह्मीक पूर्वी भारतक एकटा रूप 'कुटिल लिपि'सँ उद्भूत भेल अछि। तिरहुता लिपिक विकासक्रम निम्न आरेखमे द्रष्टव्य अछि --

" ब्राह्मी लिपि (प्राचीन भारतक लिपि)> कुषाण लिपि गुप्तलिपि > कुटिल लिपि > पूर्वी कुटिल लिपि > मैथिली, वङ्गला, असमिया, उड़िया, नेपाली आदि।"5

ओना 'तिहुंता 'क उत्पत्ति आ' विकासक प्रसंग कथा कदाचिते कतहुँ विस्तारपूर्वक कहल गेल अछि। जँ कतहु कहलो गेल अछि तँ प्रायः अँटकरे सँ काज लेल गेल अछि। मिथिलाक्षरकँ तिरहुता ओहि समयसँ कहल जाए लागल जहिआ एहि भू-भागक नाम 'तिरहुत' पड़ल, इहो बात अनुमाने पर आधारित अछि। मुदा निश्चित रूपँ ई नहि कहल जा सकैछ जे मिथिलाक्षरक उद्भव कोन समयमे आ' कोन रूपेँ भेल छल। 'शतपथ ब्राह्मण' सँ ज्ञात होइछ जे आर्यलोकनिक एकटा समूह (दल) माधव विदेह आ' हुनक पुरोहित रहुगणक नेतृत्वमे सरस्वती नदीसँ सटले विदेह राजवंशक स्थापना कएलनि। इहो संभव अछि जे ओलोकनि अपना संग सिन्धुधाटीक सभ्यता, संस्कृति, भाषा लिपिकँ सेहो अनने होथि। 'वृहदारण्य उपनिषद्'क तेसर-चारिम अध्यायमे वर्णित जनक याज्ञवल्क्य संवाद एवं दोसर अध्यायमे वर्णित याज्ञवल्क्य- मैत्रेयी संवादमे जाहि रूपक सारगर्भित तर्क प्रणाली भेटैछ, ताहिसँ सम्भवतः ई अनुमान लगाओल जा सकैछ जे शतपथ कालीन विदेह सर्वांग सम्पूर्ण विकसित राष्ट्र छल, जकर स्वतंत्र अपन 'वैदेही भाषा' आ' 'वैदेही लिपि' रहल होएतैक। एहि तथ्यक सम्पुष्टि बौद्धधर्मक प्रसिद्ध ग्रन्थ 'ललित विस्तर' (जकर चर्च पहिने कएने छी) सँ सेहो होइछ। एहि ग्रन्थक चीनी अनुवाद 308 ई. मे भेल छल। एहि ग्रन्थमे 66 गोट लिपिक सूची देल गेल अछि; जकरा अन्तर्गत 'पूर्व विदेह लिपि'क चरचा सेहो भेल अछि। सर्वांगीण पूर्वीय क्षेत्रक मैथिली, बङ्गला, असमिया आ' उड़िया लिपिक विकास सम्भवतः 'विदेह लिपि'सँ भेल होअए; इहो पक्ष सबल बुझाइत अछि।

मिथिलामे लिपिक प्राचीनताक एकटा प्रमाण आओर उपलब्ध अछि। विदेह राज्यक स्थापनाक पहिने एहिठाम 'व्रात्य' नामक आदिवासीसभ निवास करैत छल, जकरा प्रसंग 'संहिता' आ' 'ब्राह्मण ग्रन्थ' सभमे नीचवाचक शब्दक प्रयोग

भेटैछ। मुदा 'व्रात्य' समुदायक प्रभाव सम्पूर्ण उत्तरी भारतमे छल, जकर अपन संस्कृति, साहित्य आ' लिपि लौकिक छल। प्रायः तँ व्रात्यलोकनि 'ब्राह्मण ग्रन्थ 'मे अनादरक पात्र छथि। महाभारतमे लिच्छविकेँ 'व्रात्य क्षत्रिय' कहल गेल अछि आ' भगवान् बुद्ध 'बज्जी'क संज्ञा देने छथि, जकर अर्थ इछ- 'घुमक्कड़'। व्रात्यक भाषाकै 'बाटुला' अथवा 'वर्तनी' कहल जाइत छल। मिथिलामे वर्णमालाकेँ वर्तनिए कहल जाइछ जे सम्भवतः मिथिलाक्षरक ब्रात्यलोकनिक तात्कालिक लिपिक संग घनिष्ठ सम्बन्धक द्योतक थिक। एहि प्रकारेँ मिथिलाक्षरक मूल उत्स 'ललित-विस्तर'क विदेह लिपिसँ बहुतो प्राचीन सिद्ध भऽ जाइछ।

ऐतिहासिक प्रगतिक दृष्टिएँ लिपिक प्राचीनतम आ' आरम्भिक रूप चित्रात्मक छल, अर्थात् मनुक्ख अपन मनोभावकेँ लिपिबद्ध करबाक धेयसँ चित्र बनाए स्पष्ट करैत छल। ई प्रणाली अत्यन्त दोषपूर्ण छल आ' से सांकेतिक अनन्ततासँ पार्थक्यक कारणेँ। पश्चात् 'भाव लिपि'क आविष्कार भेल। विश्वभरिमे एहि रूपक भावलिपि जे बनल, तकरा चारि कोटिमे राखल जा सकैछ-भारतीय, यूरोपीय, सामी (सेमेटिक) आओर चीनी। भारतमे प्राचीन कालमे मात्र दूटा लिपि प्रचलित छल 'ब्राह्मी लिपि' वाम कातसँ दहिन दिसि लिखल जाइत छल, तँ खरोष्ठी लिपि दहिनासँ बामा दिसि। ब्राह्मीएँ लिपिसँ सम्पूर्ण भारतीय लिपिक उद्भव मानल गेल अछि।

जेनाकि पूर्वहि कहि चुकल छी भारतीय लिपि परम्परा अति प्राचीन रहल अछि। थोड़ेक दिन पूर्व धरि विदेशी लेखकलोकनि, जेना- वूलर, वेबर, कुपेरी, सेनार्ट, बिल्सन आदिक अभिमत छलनि जे भारतमे विचारकेँ लिपिबद्ध करबाक लेल लिपि बाहर (सेमेटिक, पश्चिम एशिया) सँ आयल ; मुदा आब ई मत मान्य नहि रहि गेल अछि। कोलब्रुक, कनिंधम, जयसवाल आदि विद्वान्लोकनि एकरा आर्य उत्पत्ति सिद्ध कऽ देलनि अछि। अशोक कालक अभिलेख तँ प्राप्त होइछ, मुदा हड़प्पा आ' मोहनजोदडोमे किछु एहन अभिलेख- खण्ड प्राप्त भेल अछि जकरा आधारपर ई कहल जा सकैछ जे भारतमे लिखबाक प्रथा अत्यन्त प्राचीन कालहिँ अछि। पाणिनिकृत अष्टाध्यायीमे लिपिक उल्लेख भेटैत अछि। जैन सूत्रक मोताबिक भारतमे अठारह टा लिपि प्रचलित छल। वैदिक साहित्य एवं बौद्ध महाबग्गक अनुसार सेहो भारतवर्षमे ईसाक पाँचम अथवा छठम शताब्दीमे लिखबाक प्रथा विद्यमान छल। मेगास्थनीज, सिकन्दर आदिक समयमे सेहो लेखन कला पर्याप्त उन्नत अवस्थामे छल। एहि सम्बन्धमे महामहोपाध्याय गौरीशंकर हीराचन्द ओझाकृत 'भारतीय लिपिमाला' (1894 ई), बूह्लर कृत 'ऑन दि ओरिजिन ऑफ दि इण्डियन ब्राह्म अलफाबेट' (1895-1898 ई.) तथा श्री राजवली पाण्डेय कृत 'इण्डियन पैलिग्राफी' आदि ग्रन्थ विशेष प्रसिद्ध अछि। मैथिली लिपिपर स्व. राजेश्वर झा द्वारा 'मिथिलाक्षर : उद्भव ओ विकास' ग्रन्थ सेहो प्रकाशित भेल अछि।

' यूरोपीय विद्वान् 'बूह्लर' आ' 'वेबर' आदि ब्राह्मी लिपिक सम्बन्ध पश्चिम एशियाक कोनो प्राचीन लिपिसँ मानैत छथि जे पहिने कहि चुकल छी। 'बूह्लर'क कहब छनि जे ब्राह्मी लिपिक 22 अक्षर उत्तरी (सेमेटिक) लिपिसँ लेल गेल अछि। एकर अतिरिक्त विभिन्न विद्वान् एकर उत्पत्ति कीलाक्षर, फनीशी, चीनी, सामी प्रभृति लिपिसँ मानैत छथि, मुदा कोनो युक्तिसंगत प्रमाण अपना मतक सम्पुष्टिमे नहि दैत छथि। "जखनसँ पूर्वीय भारतीय वर्णमाला स्पष्ट भए पृथक् दृष्टिगोचर होमय लागल छैक तखनसँ बूह्लर साहेबक लिपि-सम्बन्धी ग्रन्थमे अपूर्णता देखि पड़ैछ, किएक तँ उत्तर भारतीय वर्णमालाक पूर्वीय रूपसभक पृथक् कए विवरण नहि देने छथि -- मात्र ओ शारदा वर्णमालाक उदाहरण देने छथि जे कि आठमहि शताब्दी ईस्वी धरिमे पूर्ण

विकसित भए गेल, आओर बहुत आगाँ आबि कए मात्र प्राक् बङ्गला लिपिक उदाहरणसभ दैत अछि।"6

"इएह घुमाघुमाकए लिखल जाएबाला पूर्वीय वर्णमाला साक्षात् बङ्ङ्गला-असमिआ, मैथिली आओर उड़िआ लिपिक स्रोत थिक। एहिमे बङ्ङ्गला-असमिआ आ' मैथिली वस्तुतः एके थिक; उड़िआमे लगभग जतेक रूप छैक से प्राचीन बङ्ङ्गलाक हस्तलेखसभमे भेटैत छैक। वास्तवमे संस्कृत हस्तलेख मिथिलाक्षरमे लिखल छैक तकरा बंगाली पण्डितलोकनि सुविधापूर्वक पढ़ि लैत छलाह आ'र एहि अक्षरसभकेँ 'तिरुते' कहैत छलथिन। ... मगधमे वएह वर्णमाला प्राक्-मुसलिम युगक हस्तलेखसभमे भेटैछ जे मागधक नालन्दा ओ विक्रमशिलाक लिखल नेपालमे प्राप्त भेल अछि। किन्तु पश्चात् काल आबिकए घुमाघुमाकए लिखल जाएबाला लिपि एकटा आशुलिपिवत् (बिना शिरोरेखाक) प्राचीन

देवाक्षरक भारतीय वर्णमालामे, जे उत्तर एवं पूर्वीय भारतमे सातम शताब्दीसँ कैथी नामे प्रचलित छैक, से भोजपुरिया क्षेत्र होइत मगधमे भेटैत अछि आओर इएह कैथी वर्णमाला आइ धरि क्षेत्रकै धएने चल अबैछ। कैथीक प्रचार ओकर सरलताक कारण आइ मिथिलहुँमे भए गेल छैक, ओतए मैथिल ब्राह्मणलोकनि आ'र किछु उच्चवर्गीय लोक पुरना मिथिलाक्षरक धेने छथि, आ'र आइ-काल्हि हिन्दीक विस्तार भेलासँ तथा संस्कृतसँ आइ विशेष सम्पर्क स्थापित भए जेबाक कारणें, देवाक्षर मैथिली भाषाकेर छापामे प्रयोग होअए लागल अछि। उड़ीसामे पुरना घुमाघुमाकए लिखल जाएबाला पूर्वीय लिपि पनरहम शताब्दीएसँ आइए जकाँ बदलए लागल, जाहिसँ ओ सम्प्रति वङ्गला-मैथिलीक स्वरूपसँ बहुत पृथक् भए गेल अछि। "7

प्रमाणक दृष्टिएँ सर्वाधिक तिरहुताक प्राचीन दृष्टान्त भेटैछ म.म. हरप्रसाद शास्त्री द्वारा अनुसंधान कएल 'बौद्धगान ओ दोहा'क तालपत्रक 'पाण्डुलिपिम'मे। राहुल सांकृत्यायन तिब्बत मध्य 'करूबुल्ला सावन'क तालपत्र देखने छलाह, जकरा ओ प्राचीन तिरहुता कहने छथि। एहि मध्य 'लिपि' कलाक सम्बन्धमे उल्लेख नहि भेल अछि, मुदा 'बौद्धगान ओ दोहा'सँ नबीन नहि अछि। तिरहुताक विशुद्ध दृष्टान्त भेटैछ कर्नाट राजा नान्यदेव (1097 ई) क मंत्री श्रीधर दासक अन्हराठाढ़ीक शिलालेखमे। तैं अंग्रेजीक प्रख्यात विद्वान् डॉ. अमरनाथ झा मैथिलीक सर्वांश सम्पूर्ण स्वरूप 9म-10म शताब्दी मानैत छथि।

प्रो. राधाकृष्ण चौधरी वैशालीक कटरा नामक स्थानसँ उपलब्ध ताम्रपत्र-लेख, महिपाल प्रथम केर समयक इमादपुरक मूर्तिमे उत्कीर्ण आलेख आ' विग्रहपाल द्वितीयक समय केर नीलगढ तथा वनगाँवक अभिलेखक उल्लेख कएने छथि, जाहिसँ प्राचीन तिरहुताक वैशिष्ट्यपर प्रकाश पडैछ। 11 म शताब्दीक पश्चातक पनिचोभ ताम्रपत्रक आलेख, आसी लेख, तिलकेश्वर गढ़ एवं खोजपुरक अभिलेख, भगिरथपुरक शिलालेख आदिक उल्लेख सेहो एहि सन्दर्भमे कएल जा सकैछ। 'वर्णरत्नाकर'क पाण्डुलिपि (पृ. 248) आ' विद्यापतिक भागवतक हस्तलेख सेहो एहि दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि। तत्पश्चात् महाभारतक कर्ण पर्वक प्रतिलिपि (ल.स. 327, 1436 ई.) आदिक चर्चा करब एहिठाम सेहो अपेक्षित अछि। 'बिहार रिसर्च सोसाइटी' तिरहुतामे लिखल ग्रन्थक कालानुक्रमे सूची तैयार कए मिथिलाक्षरक अध्ययनक मार्ग प्रशस्त कएलक, मुदा मिथिलाक्षरक विकास-यात्रा विस्तृत आ' वैज्ञानिक नहि प्रस्तुत कऽ सकल अछि। जतबा मिथिलाक्षरमे लिखित संस्कृत ग्रन्थसँ एकत्रित कएल गेल अछि, ओ 15म शताब्दीसँ पूर्वक नहि अछि। आचार्य परमानन्द शास्त्रीक 'मिथिला मिहिर'मे धारावाहिक रूपँ अनेक लेख आ' पण्डित राजेश्वर झाक 'मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास' नामक पोथी महत्त्वपूर्ण स्थान रखैछ, जाहिसँ मिथिलाक्षरसँ सम्बद्ध विभिन्न विषयक तथ्यक चित्र निरूपित होइछ। 8 कतोक विद्वान् प्राचीन बङ्गला लिपिसँ मिथिलाक्षरक उद्भूत मानैत छथि। हुनकालोकनिक कहब छनि जे बङ्गला लिपिक जन्म प्राचीन नागरीक पूर्वी शैलीसँ ।। म शताब्दीमे भेल अछि। किछु लोक एकर उद्भव 7म शताब्दी सेहो मानैत छथि जकरा विषयमे पहिने कहि चुकल छी। हुनकालोकनिक कहब छनि जे वङ्गला-लिपिक संग-संग किछु समयक पश्चात् 'र', 'स', 'य' आदि अक्षरक किछु स्वरूप-परिवर्तनक संग मिथिलामे मिथिलाक्षरक विकास भेल आ' ओ 14म शताब्दी धरि पूर्ण रूपेँ विकसित भऽ गेल जे प्राचीन शिलालेख, ताम्रपत्र ओ भोजपत्रमे भेटैत अछि। पश्चात् एहि लिपिमे थोड़ेक परिवर्तनक संग कैथी लिपिक विकास भेल।9

तिरहुता लिपिक वैशिष्ट्य :

तिरहुता सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि मानल जाइत अछि। एहि लिपिमे संसारक समस्त ध्वनिकेँ उच्चारण करबाक सामर्थ्य छैक। एहि लिपिक एकटा अन्य विशेषता ई अछि जे एहिमे जे किछु लिखल जाइत अछि वएह उच्चारण सेहो होइत अछि, मुदा संसारक अन्य भाषाक संग ई बात नहि अछि। 10.

जेना, अङ्गरेजीक Talk, Walk, Doctor, School आदि शब्दमे हमरालोकनि देखैत छी जे अक्षर कोनो अछि आ' उच्चारण किछु आओर होइछ। परञ्च मैथिलीक संग एना नहि होइछ। एहि प्रकारेँ मिथिलाक्षरक कतोक अन्य विशेषतासभ अछि-

(1.) ’मिथिलाक्षर’ अथवा ’तिरहुता’ जाहि शैली वा काट अथवा आकारमे लिखल जाए लागल तकर कारण निश्चयपूर्वक कहब कठिन अछि। एहि मध्य अनेको एहन विलक्षणता अछि जे एकरा बङ्गला आ’ असमिया लिपिसँ सर्वथा पृथक् करैत अछि। बङ्गला आ’ उड़िया लिपि अपन प्राचीन आकृतिमे पर्याप्त परिवर्तन कए चुकल अछि, जे एकर प्राचीन आ’ नवीन ’र’क तुलनासँ स्पष्ट भऽ सकैछ, मुदा तिरहुता एखनहुँ अपन मूल रूप धारण कएने अछि। (2.) तिरहुता ओ असमिआ दुहू लिपिक उच्चारण ’ऑंजी’ (r) सँ होइत अछि। मिथिलामे कोनो बालकक अक्षरारम्भ होइत अछि तँ सर्वप्रथम ओहि बालकसँ ’आँजी’ ओ ’सिद्धिरस्तु’ लिखाओल जाइछ। देवनागरीक प्रचारेँ मिथिलाक दैनिक व्यवहारसँ ’तिरहुता’ उठि जकाँ गेल अछि, तथापि परम्परागत मैथिल-संस्कृति-संपोषक परिवारमे एखनहुँ तिरहुताक व्यवहार पूर्ववत् होइछ। विशेषतः विवाह, उपनयनादिक अवसरपर निमंत्रण-पत्र लिखवामे। कतोक लोक देवनागरीक प्रयोग करितहुँ आरम्भमे ’आँजी’ चिह्नक प्रयोग करैत छथि। ’आँजी ’क अर्थक प्रसंग विद्वान्लोकनिमे मतान्तर अछि। किछु लोक एकरा मंगलसूचक गणेशजीक दाँतक आकृति मानैछ, मुदा पद्मनाभ भट्टाचार्य ’आँजी ’क कोनो अक्षर नहि, तंत्र सम्बन्धी कुण्डलिनीक सर्पाकार प्रतीकात्मक आकृति सएह मानैत छथि जे प्रत्येक अक्षरमे व्याप्त रहैछ, एकर उच्चारणकेँ नियमित बनओने रहैछ। तंत्रग्रन्थसँ सिद्ध होइछ जे द्विदलचक्र (आँजी चक्र) में उपर कलाक स्थिति रहैछ जे योगिन् (तंत्रोपासक मात्र) कँ अति प्रिय होइत छनि। (३) कतोक विद्वानक मतानुसार तिरहुताक आकृति तान्त्रिक यन्त्रमै विकसित भेल अछि, जेना त्रिकोण, चतुष्कोण, वृत्त, बिन्दु प्रभृतिसँ, अर्थात् तिरहुताक अक्षरसभ तांत्रिक यंत्रक प्रतीक थिक। मिथिला आदिकालहिसँ तान्त्रिक उपासनाक केन्द्रभूमि रहल अछि एवं एकर सामाजिक आ’ सांस्कृतिक जीवनपर तन्त्रक घनिष्ठ प्रभावकँ एखनहुँ अनुभव कएल जा सकैछ। इएह कारण अछि जे अन्य लिपिक अपेक्षा ’तिरहुता ’मे लिखल ग्रन्थ पूजा-पाठक हेतु बेसी उपयुक्त ओ प्रभावशाली बुझल जाइछ।

मिथिलाक्षरक अन्य विशेषता जे एकरा आन पूर्वांचलीय लिपिसँ विलक्षण सिद्ध करैछ, से थिक (क) अधिकांश संयुक्ताक्षर ’र्ग’, ’क्र’, ’ष्ण’, ’त्र’ प्रभृतिक हेतु फराक-फराक अक्षराकृति होयब। (ख) ’ओ’, ’औ’, ’अ’ने मात्रा लगाए नहि लिखल जाइत अछि, प्रत्युत ओकरा हेतु अक्षरसबहिक प्रधानता अछि। (ग) मिथिलाक्षर (तिरहुत) मध्य देवनागरीसँ भिन्न रीतिएँ मात्राक संयोजन होइछ। (घ) ई रोमन लिपिए जेकाँ अतिशीघ्रतासँ लिखल जा सकैछ, रोमन लिपि जेकाँ बिनु हाथ उठाओने अथवा पाछाँ कएने। (ङ) एकर वर्णो ’ककहरा’ कहल जाइछ आ’ प्रत्येक अक्षरमे मात्रा लगएबाक नाम निश्चित कएल गेल अछि। जेना- तरकेटा (कए कान) ’क’; काईचुन ’का’; हरिसँ ’कि’; दुरधैँ ’की’; तारे ’कु’; बारजन ’कू’; एकलेँ ’के’; दोलेँ ’कै’; कलमत ’को’; दुधकन्ना ’कौ’; मस्ते ’कं’; कबसर (कविसर्ग) ’कः’। 11 एहिमे पूर्णविरामकँ ’पासी’ कल जाइत अछि। (च) ’ओ’ तथा ’औ’ मिथिलाक्षरमे स्वतंत्र वर्ण अछि जे ’अ’ मे मात्रा लगाए कए बनैत अछि। (छ) देवनागरीक तुलनामे लघु आ’ दीर्घ मात्रा लगएबाक चिह्न मिथिलाक्षरमे भिन्न होइत अछि। (ज) ’ण’ तथा ’ष’क लेल मिथिलाक्षरमे दू-दू टा वर्ण अछि। (झ) एकर वर्णमालाकेँ ’हरा’ कहल जाइछ। (ञ) ध्वनि विषमताक संकेत सेहो अक्षराम्भहिमे दए देल जाइछ, जेना- ’य’ पोखरिआ (य) ’ज’ तथा ’ष’ पेटकट्टा (पेटचिरा) ’ख’ कहबैछ। (ट) मिथिलाक्षरक वर्णमालाक अन्त उर्ध्वगतिएँ होइछ। 12

निष्कर्ष :

प्रस्तुत आलेखक विवरणसँ स्पष्ट अछि जे ’ मिथिलक्षर’ वा ’तिरहुता’ एकटा स्वतंत्र लिपि थिक जे हजारो सालसँ वैज्ञानिक रूपेँ मिथिलाक व्यावहारिक जीवन आ’ ग्रन्थ लेखनमे प्रयुक्त होइत आबि रहल अछि। तिरहुता लिपिक उद्भव, ओकर श्रोत वा दृष्टान्त, प्राचीन पोथी, अभिलेख, शिलापट आदि जे तिरहुता लिपिमे लिखल अछि तकराबहिक दृष्टान्त प्रस्तुत क ’ एकर प्राचीनताकेँ स्थापित करबाक लेल प्रस्तुत आलेखमे प्रयास कएल गेल अछि। तिरहुताक विभिन्न कालखण्डमे नामकरण, जेना- मैथिली लिपि, वैदेही लिपि, मिथिलाक्षर, मैथिलाक्षर तिरहुता वा तिर्हुता इत्यादि मैथिली भाषाक ऐतिहासिता सिद्ध करैत अछि। तिरहुता लिपिक वर्तनी सेहो अन्य भारतीय आर्यभाषा वा विश्वभाषासँ तुलनात्मक रूपेँ सहज अछि जे एकर ”वर्णमाला” वा ”ककहरा”क ध्वनि- उच्चारणसँ स्पष्ट भ’ जाइछ। तेँ एकर वर्णमालाकेँ ’हरा’ कहल जाइछ तथा ध्वनि विषमताक संकेत एहिमे अक्षरारम्भहिमे दए देल जाइछ आ’ वर्णमालाक अन्त उर्ध्वगतिएँ

होइछ जे रोमण वा आंग्ल भाषाक लिखाबटि सदृशहिँ बिनु हाथ उठओने लिखल जाइछ, इएह मिथिलाक्षरक मूल वैशिष्ट्य थिक।

संदर्भ-सूची :

1. वर्मा डा. बजरंग, 1966, उमापतिक पारिजात हरण, पृ. 118

2. झा श्री इन्द्रनारायण, 1984, मिथिला अन्वेषण एवं दिग्दर्शन, रामगढ, झारखण्ड: विद्यापति परिषद्, पृ. 360

3. उद्धृत आ' प्रकाशित रिपोर्ट : हिन्दुस्तान टाइम्स, 8 नवम्बर, 2011

4. मिश्र डा. जयकान्त, 1988, मैथिली साहित्यक इतिहास, नइ दिल्ली : साहित्य अकादेमी, पृ. 120

5.झा, डा विजयेन्द्र, 2023, मैथिली साहित्यक इतिहास, मुजफ्फरपुर : प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 121

6. मिश्र डा जयकान्त, 1988, मैथिली साहित्यक इतिहास, नइ दिल्ली : साहित्य अकादेमी

7. चाटुर्ज्या डा. सुनीति कुमार, आरिजिन एण्ड डिवलपमेन्ट आफ मैथिली लैंग्वेज, भाग -1, पृ. 34

8. झा विजयेन्द्र, 2022, मैथिली भाषाविज्ञान, मुजफ्फरपुर: प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 895

9 ओएह, पृ. 895 96

10. मैथिली भाषाक उद्भव ओ विकास: एक विश्लेषण

-- By Dr. Bijayendra Jha

IJMT- International Journal of Multidisciplinary Trends(Multidisciplinary PEER-REVIEWED, Research Journal Indexed Journal) Online ISSN: 2709-9369, Print ISSN: 2709:9350, Vol. 7, Issue-9, Published: 2025, Impact Factor : RJIF 6.32, Certificate No.-7-9-32, page- 121-129

Website - wwwmultisubjectjournal.com/archives/2025/.v.i9.B.792

Email- multisubjrctjournal@gmail.com

Mob. 9711224068/9718222251

11. झा पं. गोविन्द, 2007, मैथिली परिशीलन, पटना:मैथिली अकादमी

12. झा डा. विजयेन्द्र, 2022, मैथिली साहित्यक इतिहास (आदिकाल आ'मध्यकाल), मुजफ्फरपुर : प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 127